मूल्य : एक प्रति ` 0.50 वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 19, अंक 8

अगस्त 2014

अंदर के पृष्ठों में . . . . . ➤

स्कूली बच्चों के लिए कथावाचन एवं संवाद	2
हैदराबाद में रा.पु. न्यास के पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र का उद्घाटन	3
अल्मोड़ा पुस्तक प्रदर्शनी	3
शिमला पुस्तक मेला	4
शिमला में शिक्षा शिविर	4
कार्य स्थल पर यौन उत्पीड़न पर नवसमिति का गठन	4
भोपाल में 'मीडिया लाइव' का लोकार्पण	5
बिलासपुर में सतत संवाद कार्यशाला	5
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय	6
पुस्तक परिचय	7
सेवानिवृत्ति	8
आगामी पुस्तक मेले	8

नवीनतम प्रकाशन

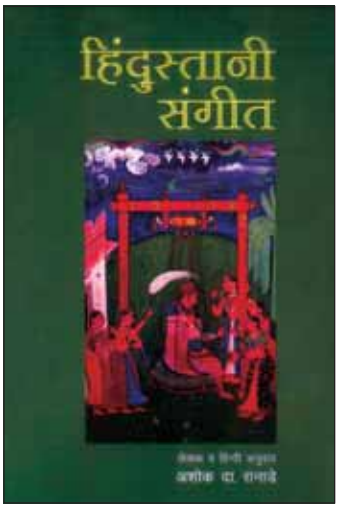

हिंदुस्तानी संगीत

लेखन व हिंदी अनु. : अशोक दा. रानाडे

पृ. 168 ` 165

ISBN 978-81-237-7145-8

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास का 57वाँ स्थापना दिवस समारोह

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का 57वाँ स्थापना दिवस समारोह 1 अगस्त, 2014 को एनबीटी मुख्यालय, नेहरू भवन, वसंत कुंज, नई दिल्ली में उल्लासपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर न्यास द्वारा 'वर्तमान भारत में पुस्तकें एवं पठन' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात लेखक प्रो. के. सच्चिदानंदन द्वारा की गई तथा व्याख्याता के रूप में प्रसिद्ध लेखिका, सुश्री शशि देशपांडे उपस्थित थीं।

पुस्तकों एवं पठन-प्रवृत्ति पर अपने विचार व्यक्त करते हुए सुश्री देशपांडे ने कहा, ''हालाँकि शहरों में उचित स्थान के किराए का स्थान वहन न कर पाने के कारण पुस्तकालय एवं पुस्तक विक्रय केंद्र अपना अस्तित्व खोते जा रहे हैं, परंतु फिर भी वर्तमान समय में समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं तथा ई-पुस्तकें पढ़ने वाले पाठकों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। बड़ी संख्या में लोग लेखन कार्य में रुचि ले रहे हैं तथा इसका मुख्य कारण यही है कि वे अच्छे पाठक हैं।'' उन्होंने कहा कि बचपन से ही पुस्तकों तथा लेखकों के प्रति उन्हें एक लगाव रहा है। पुस्तकों ने उनके जीवन को काफी प्रभावित किया है तथा उनके भविष्य को एक दिशा प्रदान की है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. के. सच्चिदानंदन ने भारत में पुस्तकें एवं पठन तथा प्रकाशन उद्योग के समक्ष आ रही चुनौतियों के बारे में बात की। उन्होंने कहा, ''हमारे पास पुस्तकों या पठन का व्यापक इतिहास मौजूद नहीं है।'' उन्होंने देश में पुस्तक प्रोन्नयन व पठन संस्कृति का निर्माण करने में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के प्रयासों की सराहना की तथा यह आशा भी जताई कि एनबीटी इसी तरह भविष्य में भी पाठकों एवं पुस्तक-प्रेमियों की सहायता करता रहेगा।

इससे पूर्व, रा.पु. न्यास के अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन ने इस अवसर पर उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत

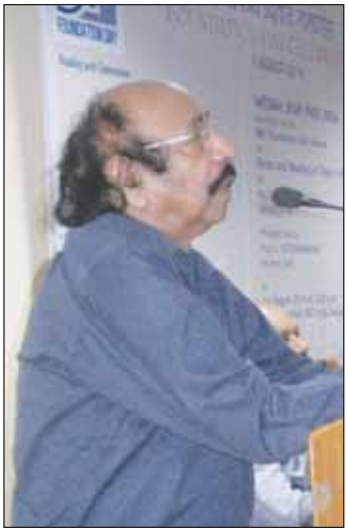

किया। उन्होंने कहा कि मुझे यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि संभवतः देश में एनबीटी ही एकमात्र ऐसा संगठन है, जो 22 भारतीय भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करता है। उन्होंने इस अवसर पर उपस्थित सभी अतिथिगणों को यह भी बताया कि लोगों में पुस्तक पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने के लिए न्यास द्वारा देश-भर में पुस्तक प्रोन्नयन केंद्रों की स्थापना की जा रही है। उन्होंने भारत के पहले प्रधानमंत्री, पंडित जवाहरलाल नेहरू के एनबीटी को एक 'पुस्तक अस्पताल' के रूप में देखने के स्वप्न की भी बात की।

समारोह के अंत में रा.पु. न्यास के निदेशक, डॉ. एम.ए. सिकंदर ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर एनबीटी के उन कर्मचारियों/अधिकारियों को कार्यकाल के 25 वर्ष पूर्ण कर लेने पर बधाई एवं स्मृति चिह्न प्रदान किये गए।

यह एनबीटी द्वारा आरंभ की गई व्याख्यान शृंखला में तीसरा स्थापना दिवस व्याख्यान है। इस वार्षिक व्याख्यान शृंखला की शुरुआत वर्ष 2012 में की गई थी।

इसका उद्देश्य वर्तमान संदर्भ में पुस्तकों एवं पठन के महत्व को प्रस्तुत करने वाले उन विद्वानों, साहित्यिक हस्तियों, बुद्धिजीवियों तथा प्रकाशन की दुनिया में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों को आमंत्रित कर उनके महत्वपूर्ण विचारों को साझा करना है। इस शृंखला में पहला व्याख्यान वर्ष 2012 में विख्यात लेखक एवं सांसद, डॉ. शशि थरूर तथा दूसरा व्याख्यान वर्ष 2013 में प्रख्यात समाजशास्त्री तथा राष्ट्रीय अनुसंधान प्रोफेसर प्रो. आंद्रे बेतिए द्वारा प्रस्तुत किया गया था।

स्कूली बच्चों के लिए कथावाचन एवं संवाद

बच्चों में पठन रुचि एवं पठन आदत के विकास के अपने निरंतर प्रयासों के दृष्टिगत, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा, न्यास कार्यालय परिसर में, 25 जुलाई, 2014 को एक कथावाचन सत्र का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत, न्यास से हाल ही में प्रकाशित पुस्तक, 'फिर खिल गए फूल' की लेखिका, श्रीमती कुसुमलता सिंह तथा पुस्तक के लिए चित्र बनाने वाले चित्रकार, श्री पार्थ सेनगुप्ता का बच्चों के साथ संवाद हुआ। लेखिका ने उक्त पुस्तक का वाचन भी किया।

बच्चों के साथ अपने अनौपचारिक संवाद में कुसुमलता सिंह ने बच्चों से कहा कि उन्होंने अपने स्कूली दिनों से ही लिखना शुरू कर दिया था। उन्होंने कहा कि वह एक 'उत्सुक पाठक' थीं और पढ़ने की आदत ने ही उनमें लिखने की ललक पैदा की। वह अपने विचारों को कागज पर लिखने लगीं। लेखिका ने 'फिर खिल गए फूल' पुस्तक की रचना-प्रक्रिया के अपने अनुभव बच्चों से साझा करते हुए बताया कि उन्हें इस पुस्तक को लिखने का विचार सुबह की सैर में आया।

श्री पार्थ सेनगुप्ता ने पुस्तक में बनाये गए अपने चित्रों को लेकर बच्चों से बातचीत की। उन्होंने कहा कि किसी कहानी में लेखक द्वारा दिये गए छोटे-छोटे विवरण चित्रकार के लिए उस कहानी की चित्र-रचना में सहायक होते हैं। उन्होंने कहा कि चित्रकार भी अपने चित्रों को आकर्षक बनाने में अपनी कल्पना और सृजनात्मकता का उपयोग करता है। बच्चों ने इस सत्र में खूब दिलचस्पी दिखाई। सत्र का समन्वय न्यास के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के संपादक, श्री मानस रंजन महापात्र ने किया।

बच्चों ने न्यास का पुस्तक विक्रय केंद्र भी देखा तथा पुस्तक पर लेखिका एवं चित्रकार के ऑटोग्राफ लिये।

इससे पूर्व, कार्यक्रम की शुरुआत में, न्यास के निदेशक, डॉ. एम.ए. सिकंदर ने लेखक, चित्रकार एवं उपस्थित बच्चों तथा आगंतुकों का स्वागत किया। उन्होंने न्यास द्वारा पठन आदत के प्रोन्नयन हेतु की जा रही विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी दी एवं बच्चों से अधिक-से-अधिक पुस्तकें पढ़ने की अपील की। इस अवसर पर, छात्रों ने पर्यावरण के बारे में जागरूकता के सृजन हेतु अतिथियों को पौधे भेंट किए।

हैदराबाद में रा.पु. न्यास के पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र का उद्घाटन

पुस्तक-प्रेमियों के एक व्यापक समूह तक राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की पुस्तकें आसानी से उपलब्ध करवाने के लिए रा.पु. न्यास द्वारा देश-भर के प्रमुख शहरों में पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र खोलने की पहल की गई है।

इसी पहल के तहत रा.पु. न्यास द्वारा हैदराबाद में आंध्र महिला सभा बिल्डिंग, उस्मानिया यूनिवर्सिटी रोड पर 'हैदराबाद पुस्तक प्रोन्नयन-सह-विक्रय केंद्र' खोला गया है।

इस केंद्र का उद्घाटन 21 जुलाई, 2014 को आंध्र प्रदेश विधानसभा के उपाध्यक्ष, एम. बुद्ध प्रसाद द्वारा किया गया। प्रख्यात लेखक, प्रो. एन. गोपी; प्रसिद्ध इतिहासकार, प्रो. वी. रामकृष्णन तथा आंध्र महिला सभा की अध्यक्षा, सुश्री के. लक्ष्मी की उपस्थिति ने अवसर की शोभा और अधिक बढ़ा दी।

पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र में अँग्रेजी, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की एक विस्तृत पुस्तक शृंखला के अतिरिक्त एक 'गतिविधि कक्ष' बनाया गया है जहाँ सभी साहित्यप्रेमी व साहित्य के प्रति अनुराग रखने वाले लोग एक स्थान पर मिल सकेंगे।

मीडियाकर्मियों से बातचीत करते हुए रा.पु. न्यास के निदेशक, डॉ. एम.ए. सिकंदर ने पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र की संकल्पना को स्पष्ट किया। ''पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र की अवधारणा केंद्र सरकार की 12 वर्षीय योजना के अंतर्गत आती है तथा इसकी शुरुआत सभी भाषाओं के लेखकों एवं पाठकों को प्रोत्साहित करने के लिए की गई है। हिंदी में ऐसे किसी स्थान को 'पुस्तक अड्डा' के नाम से जाना जाता है। यह अवधारणा पुस्तक क्लब के समान है जहाँ लोग एक स्थान पर मिलकर पुस्तकों से संबंधित चर्चा करते हैं तथा विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेते हैं। इस कार्यक्रम का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू 'सचल पुस्तक प्रदर्शनी वाहन' है, जो यहाँ के पुस्तक-प्रेमियों की सुविधा के लिए विभिन्न गाँवों में जाएगी। 'सचल पुस्तक प्रदर्शनी कार्यक्रम' की शुरुआत का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में रह रहे लोगों तक पुस्तकें पहुँचाना है।

इन सचल पुस्तक प्रदर्शनियों के माध्यम से न्यास विभिन्न गाँवों तक पुस्तकों का लाभ पहुँचाने का प्रयास करता रहा है।

पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र विशेष रूप से लेखकों एवं अन्य साहित्यिक संगठनों को ध्यान में रखकर खोले गए हैं जिससे कि वे यहाँ पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम तथा पुस्तकों से संबंधित अन्य गतिविधियों का आयोजन कर सकें।

न्यास द्वारा ऐसे ही केंद्र चेन्नै, गुवाहाटी, अगरतला तथा पटना में भी खोले गए हैं। जल्दी ही कोच्चि में भी ऐसा केंद्र खोला जाएगा। हैदराबाद पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र के प्रभारी रा.पु. न्यास के तेलुगु संपादक डॉ. पथिपका मोहन हैं।

अल्मोड़ा पुस्तक प्रदर्शनी

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 12 से 18 जुलाई, 2014 तक होटल भगवती पैलेस, लिंक रोड, अल्मोड़ा (उत्तराखंड) में सात दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

प्रदर्शनी का उद्घाटन 12 जुलाई, 2014 को कुमाऊँ विश्वविद्यालय के कुलपति श्री एच.एस. धामी द्वारा किया गया। उद्घाटन समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि अल्मोड़ा जैसे सुदूरवर्ती क्षेत्र में पठन-पाठन की खाई को पाटने की राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की यह एक सराहनीय पहल है। उन्होंने कहा कि कलम और किताबें आम आदमी के जीवन में अहम भूमिका निभाते हैं। उन्होंने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से यह अनुरोध किया कि ऐसे दूरवर्ती क्षेत्रों में शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए इस तरह की प्रदर्शनियाँ समय-समय पर आयोजित करें।

इस अवसर पर नगरपालिका अध्यक्ष, श्री प्रकाश जोशी; स्थानीय संयोजक, श्री मनीष अग्रवाल; उत्तराखंड लोक संस्कृति व साहित्य के लेखक, डॉ. डी.एस. पोखरिया के साथ-साथ बड़ी संख्या में पत्रकार और पाठकगण भी उपस्थित थे।

प्रदर्शनी में अँग्रेजी, हिंदी तथा उर्दू भाषा की पुस्तकें प्रदर्शित की गईं। प्रदर्शनी में स्थानीय विद्यालयों एवं कॉलेजों के विद्यार्थी, शिक्षक तथा प्रधानाचार्य भी आए तथा उन्होंने अपनी पसंदीदा पुस्तकें खरीदीं। पुस्तक प्रदर्शनी के अंतिम तीन दिनों में अल्मोड़ा में हुई लगातार बारिश ने भी पुस्तक-प्रेमियों का उत्साह कम नहीं किया। अल्मोड़ा पुस्तक प्रदर्शनी का समन्वय न्यास के उपनिदेशक (उ.क्षे.), श्री इमरान-उल-हक द्वारा किया गया।

शिमला पुस्तक मेला

हिलाचल कला, संस्कृति भाषा विभाग के सहयोग से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 30 जून से 6 जुलाई, 2014 तक गेयटी थिएटर, शिमला, हिमाचल प्रदेश में 'शिमला पुस्तक मेला' आयोजित किया गया।

मेले का उद्घाटन करते हुए हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री, श्री वीरभद्र सिंह ने कहा, ''आज की प्रौद्योगिकी प्रधान पीढ़ी के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलने के लिए प्रकाशन गृहों को नई तकनीक अपनाने की आवश्यकता है। युवाओं को पुस्तक-पठन के लिए ई-बुक्स जैसे नए मंच प्रदान किए जाने चाहिए।'' अपने संबोधन में उन्होंने बच्चों में पुस्तक पढ़ने की आदत को विकसित करने पर भी विशेष बल दिया।

इस अवसर पर श्री वीरभद्र सिंह ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित, राजा भसीन की कहानियों के संग्रह, 'फ्लॉवरवुड्स होटल' का लोकार्पण किया। पुस्तक लोकार्पित करते हुए माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा कि हिमाचल प्रदेश में अनेक लेखक, विद्वान, कवि, समीक्षक, संपादक आदि हैं तथा सरकार इनकी सहायता के लिए हर संभव प्रयास करेगी। यह बताते हुए कि हिमाचल प्रदेश लेखकों

तथा विद्वानों को एक स्वस्थ एवं सुरक्षित वातावरण उपलब्ध करवाता है, उन्होंने कला संस्कृति भाषा विभाग से अनुरोध किया कि शिमला के 'राइटर्स होम' (लेखक घर) को पुनर्जीवित व नवीनीकृत किया जाए ताकि लेखकों को बेहतर सुविधाएँ प्रदान की जा सकें।

इस अवसर पर उन्होंने 'नारी व्यथा एवं अन्यान्य कविताएँ' नामक पुस्तक के साथ-साथ, हिमाचल कला, संस्कृति, भाषा विभाग द्वारा प्रकाशित मनाली तथा निर्मंद पर आधारित विनिबंधों का भी लोकार्पण किया।

अपने विचार व्यक्त करते हुए जनसत्ता के संपादक, श्री ओम थानवी ने शिमला में पुस्तक मेले का आयोजन करने के लिए रा.पु. न्यास को शुभकामनाएँ दीं। इस अवसर पर उपस्थित विख्यात लेखिका, सुश्री राजी सेठ ने कहा कि उनके शुरुआती दिनों में हिमाचल प्रदेश ने ही उन्हें लेखन के लिए प्रेरित किया।

हिमाचल प्रदेश की कला, संस्कृति, भाषा अकादमी के निदेशक, श्री अरुण कुमार शर्मा ने अपने संबोधन में खुशी व्यक्त की कि अकादमी द्वारा पुस्तक मेले आयोजित करने का सराहनीय प्रयास किया गया। उन्होंने उम्मीद जताई कि भविष्य में ऐसे और भी पुस्तक मेले आयोजित होंगे।

इससे पूर्व, रा.पु. न्यास के निदेशक, डॉ. एम.ए. सिकंदर ने स्वागत समारोह में बताया कि रा.पु. न्यास आरंभ से ही पुस्तक प्रोन्नयन व पुस्तक-पठन हेतु समर्पित है। ''अच्छी पुस्तकों तक सबकी पहुँच बनाने के उद्देश्य से रा.पु. न्यास ने डाक विभाग के साथ एक समझौता-ज्ञापन किया है ताकि चुनिंदा डाकघरों में रा.पु. न्यास की पुस्तकें विक्रय के लिए उपलब्ध करवाई जा सकें। साथ ही, युवा पीढ़ी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए रा.पु. न्यास ने ई-प्रकाशन की भी शुरुआत की है। ई-पुस्तक प्रारूप के तहत अब तक लगभग 500 पुस्तकें उपलब्ध करवाई जा रही हैं।''

इस अवसर पर शिमला के मेयर श्री संजय चौहान; डिप्टी मेयर, श्री तिकेंदर पँवार; शिमला के उपायुक्त, श्री दिनेश मल्होत्रा तथा शिमला पुलिस अधीक्षक, श्री डी. डब्ल्यू. नेगी भी उपस्थित थे।

शिमला में शिक्षा शिविर

देश-भर में, विशेष रूप से अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति बहुल क्षेत्रों में, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा बच्चों के बीच पठन रुचि एवं पठन आदत को बढ़ावा देने एवं पुस्तकोन्नयन हेतु शिक्षा शिविर के आयोजन के क्रम में, 3-4 जुलाई, 2014 के दरमियान, शिमला पुस्तक मेला (30 जून - 6 जुलाई, 2014) में एक शिक्षा शिविर का आयोजन किया गया।

शिमला के गेयटी थिएटर में संपन्न इस शिविर में अनेक बालोपयोगी कार्यक्रमों के आयोजन किये गए। इनमें शामिल थे–कविता वाचन, कथावाचन, कथा निर्माण एवं पुस्तक चर्चा। इन कार्यक्रमों में विभिन्न स्कूलों के 300 से अधिक बच्चे शामिल हुए। श्री श्रीनिवास जोशी; सुश्री विधुप्रिया चक्रवर्ती, प्रिंसिपल, सेंट थॉमस स्कूल; श्री अजय शर्मा, सहायक निदेशक, शिक्षा एवं श्री एस. आर. हरनौट, प्रख्यात लेखक स्रोत व्यक्ति थे।

इन कार्यक्रमों की संकल्पना एवं समन्वय राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के संपादक श्री मानस रंजन महापात्र, न्यास में सहायक सुश्री सुनीता नरोत्रा एवं सुश्री शाहकार सलीम ने किया।

(**भूल सुधार :** जुलाई माह के 'संवाद' में पृ. 8 पर 'मंडी में शिक्षा शिविर का आयोजन' शीर्षक रिपोर्ट में मंडी एवं पंडोह में शिक्षा शिविर के आयोजन की तिथि क्रमशः 19 एवं 20 जुलाई छप गई है। इसे कृपया क्रमशः 19 एवं 20 जून, 2014 पढ़ें। –संपा.)

कार्य स्थल पर यौन उत्पीड़न पर नवसमिति का गठन

कार्य स्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न पर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की पुनर्गठित समिति की बैठक 3 जुलाई, 2014 को रा.पु. न्यास के समिति कक्ष में हुई।

बैठक की अध्यक्षता ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र (जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय) की कार्यकारी प्राध्यापक, डॉ. महालक्ष्मी द्वारा की गई। इस बैठक में समिति के सभी सदस्य भी उपस्थित थे जिसमें शामिल हैं–उपसचिव, खान मंत्रालय, भारत सरकार, सुश्री फरीदा एम. नाईक; संपादकीय सहायक, रा.पु. न्यास, सुश्री कंचन वांचू शर्मा; अनुवादक, रा.पु. न्यास, सुश्री अल्पना भसीन तथा सहायक, रा.पु. न्यास, श्री यशपाल सिंह।

दिल्ली में एन.बी.टी. का अन्य पुस्तक विक्रय केंद्र

4/5 बी, आसफ अली रोड
(निकट डिलाइट सिनेमा), नई दिल्ली-110 002

भोपाल में 'मीडिया लाइव' का लोकार्पण

वरिष्ठ पत्रकार रत्नेश्वर के. सिंह की पुस्तक 'मीडिया लाइव' का पिछले दिनों भोपाल में दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय में लोकार्पण और उस पर चर्चा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे, वरिष्ठ व्यंग्यकार डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी। उन्होंने कहा, ''मीडिया के पास असीम शक्ति है। उसका सदुपयोग होना चाहिए। मीडिया का दुरुपयोग बहुत घातक होता है।'' उन्होंने कहा, ''आज मीडिया की परिभाषा बदली है, इसके साथ आज दूरदर्शन को भी अपने काम-काज में पारदर्शिता लानी होगी, दूरदर्शन जनता का सेवक है।'' उन्होंने अपनी विशिष्ट शैली में चुटकियाँ लेते हुए तंत्र और मीडिया के संबंध में अनेक विसंगतियों को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि पुस्तक में परदे और उसके पीछे की कहानियाँ भी बड़े रोचक तरीके से दी गई हैं।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए पूर्व अतिरिक्त सचिव, मध्य प्रदेश सरकार, डॉ. पुखराज मारू ने कहा कि यह पुस्तक मीडिया की आने वाली पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक बनेगी। किस्सगोई की शैली में लेखक ने यह किताब लिखी है, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की कई परिभाषाओं की जानकारियाँ इस पुस्तक में दी गई हैं, जो निस्संदेह नवागंतुकों के लिए सहायक सिद्ध होगी।

आरंभ में दुष्यन्त कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय के निदेशक श्री राजुरकर राज ने आयोजन की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास में हिंदी संपादक, डॉ. ललित किशोर मंडोरा ने पुस्तक के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कार्यक्रम का संचालन किया। पुस्तक के संबंध में लेखक श्री रत्नेश्वर सिंह ने अपनी बात रखी। इस मौके पर लेखक ने कहा, ''न्यास ने मुझसे इस विषय पर लिखवा लिया, पुस्तक बताती है कि मीडिया में काम कैसे किया जाता है और किन बातों का ध्यान रखा जाता है।'' इस अवसर पर उन्होंने अपने तमाम मीडियाकर्मियों का धन्यवाद भी किया जिनके सहयोग से वे अपना काम कर पाए। पुस्तक पर वरिष्ठ पत्रकार श्री ब्रजेश राजपूत (एबीपी न्यूज), ने कहा, ''मीडिया में बहुत तेजी-से बदलाव हो रहा है यानी घटनाओं का तेजी-से विकेंद्रीकरण हो रहा है।'' उन्होंने कहा, ''दरअसल टेलीविजन की नौकरी सर्कस के मदारी की तरह होती है कि सुबह टमाटर के महँगा होने की खबर जारी करो तो शाम को किसी पलायन की खबर के लिए थोड़ा गंभीर हो जाओ।'' मीडिया विशेषज्ञ एवं माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय में विभागाध्यक्ष डॉ. संजय द्विवेदी ने कहा कि बहुत दिनों के बाद एक ऐसी किताब आई है जिसे पाठक पढ़ना चाहेंगे। जब कोई चीज अपने अनुभव के साथ लिखी जाती है तो एक बेहतर कृति तैयार होती है। उन्होंने यह भी कहा कि आज टेलीविजन ने एक संस्कार विकसित किया है और हमारी जीवन शैली को काफी हद तक सुधारने का काम भी किया है। दूरदर्शन के समाचार प्रभाग के उपनिदेशक श्री विनोद नागर ने कहा कि यह पुस्तक तमाम पत्रकारों के लिए भी जरूरी है, पत्रकारों को दक्षता निर्माण के लिए इस पुस्तक को पढ़ना बेहद जरूरी है। संग्रहालय के निदेशक श्री राजुरकर राज ने कहा कि इस तरह की पुस्तक का अभिनंदन होना चाहिए, वैसे भी इस तरह की पुस्तकें आज न के बराबर हैं। पुस्तक प्रकाशित करने के लिए उन्होंने रा.पु. न्यास का धन्यवाद भी किया।

इस अवसर पर संग्रहालय की ओर से पुस्तक के लेखक का स्मृति चिह्न प्रदान कर अभिनंदन किया गया। इस संगोष्ठी में मीडियाकर्मी, जनसंचार संस्थान के विद्यार्थी, बुद्धिजीवी समेत स्थानीय प्रबुद्ध श्रोता भी मौजूद थे। आरंभ में स्वागत वक्तव्य डॉ. अरविंद सोनी ने और अंत में कृतज्ञता ज्ञापन श्री राजुरकर राज ने किया।

बिलासपुर में सतत संवाद कार्यशाला

पिछले दिनों राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से दो दिवसीय सतत संवाद कार्यशाला का उद्घाटन छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय विद्यालय, रेलवे कॉलोनी के अँग्रेजी-हिंदी स्कूलों के करीब 300 छात्र-छात्राओं ने भागीदारी की। इस कार्यशाला में बताया गया कि रचना निर्माण कैसे किया जाता है, कैसे आप एक बेहतर कहानी या कविता या व्यंग्य को लिख सकते हैं, रेखाचित्र या नाटक की बारीकियाँ क्या होती हैं।

मजेदार बात तो यह रही कि आशा के विपरीत विद्यार्थियों में उत्साह था, कुछ कर गुजरने की ललक थी, संतोष भी अधिकांश रचनाकारों के चेहरे पर झलक रहा था। कार्यशाला का उद्घाटन रेलवे के अधिकारी, श्री अजय मोहंती व देश के चर्चित बाल साहित्यकार डॉ. प्रकाश मनु ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर डॉ. मनु ने कहा, ''बच्चे हमारी विरासत हैं। इनके कंधों पर देश का भविष्य टिका है। इनके भीतर का इन्सान इन्हें एक बेहतर नागरिक बनाएगा।'' इस कार्यशाला में प्रसिद्ध रचनाकारों में कथाकार गीताश्री, डॉ. सुधीर शर्मा, गिरीश पंकज, डॉ. जे.पी. रथ, उपनिदेशक शिक्षा, श्री सतीश जायसवाल, किशोर दिवसे ने भागीदारी की।

आसपास के जवाहर नवोदय विद्यालय के बच्चे भी अपने शिक्षक के साथ मौजूद थे, स्वयं अध्यापक अचंभित थे कि न्यास की इस लेखकीय कार्यशाला ने तीन सौ रचनाकार तैयार कर लिए। अधिकांश लेखन रचनात्मक शैली के साथ वरिष्ठ रचनाकारों की टक्कर का था। जो बात निकलकर आई वह यह कि निस्संदेह इस तरह के आयोजन समय-समय पर होते रहने चाहिए। यह बात भारतीय रेलवे सेवा के वरिष्ठ अधिकारी श्री तस्नीम हसन ने अपने वक्तव्य में भी कही। न्यास में हिंदी संपादक डॉ. ललित किशोर मंडोरा ने कहा, ''न्यास किफायती दामों पर बेहतर साहित्य छापने के लिए प्रतिबद्ध है, हमारी पूरी कोशिश रहती है कि सुंदर किताबों का सृजन इन कार्यशालाओं में किया जाए ताकि आवाम तक यह संदेश जाए कि रचना कर्म उतना आसान नहीं है बल्कि कई परीक्षाओं से होकर गुजरना पड़ता है।''

बिंदिया की संपादक, कथाकार गीताश्री ने अपने अनुभव सबके साथ साझा करते हुए बच्चों को शुभकामनाएँ दीं। वहीं बच्चों ने डॉ. प्रकाश मनु को 'दादा जी' की संज्ञा से सम्मानित करते हुए उन्हें भावभीनी विदाई देते हुए पुनः आने का निमंत्रण भी दिया। इस मौके पर गिरीश पंकज की कुछ कविताओं का पाठ भी बच्चों ने मजे लेते हुए किया। डॉ. सुधीर शर्मा ने बच्चों का शिक्षा की बारीकियों से परिचय कराया ताकि रचना करते हुए भाषा की भूलें न हो सकें। डॉ. जे.पी. रथ ने कुछ चर्चित लोक कथाओं का पाठ किया और बच्चों में एक आदर्श संस्कार देने में कामयाब हुए। निश्चित ही यह एक सार्थक कार्यशाला थी जिसमें अध्यापकों ने भी रचनात्मक लेखन का हिस्सा बनने में खुशी महसूस की। किसी को भी लग ही नहीं रहा था कि ऐसे भी बाल लेखकों की रेल तैयार हो सकती है, मगर यह रचनात्मक रेल तैयार हुई और इनका सार्थक प्रयास कुछ समय बाद दिखने भी लगेगा।

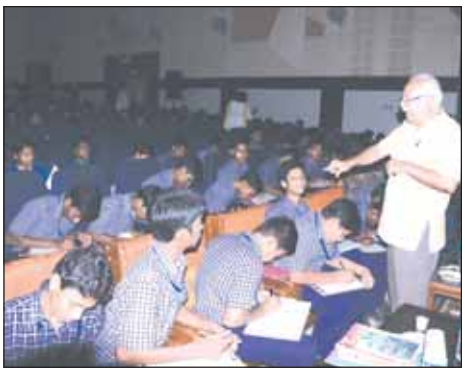

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय

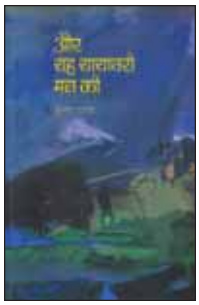

और...यह यायावरी मन की

कुमार रवीन्द्र पृ. 188 ` 160

'और...यह यायावरी मन की' एक ऐसे हिंदी घुमक्कड़ के यात्रा संस्मरणों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है कि आप इस यात्रा के होकर रह जाते हैं। कभी-कभी लगता है घूमना जरूरी क्यों है, क्या इसके बिना भी जीवन गुजारा जा सकता है, पर शायद नहीं। दूसरी बात, आज की आपाधापी में अब हर किसी के बस में रहा भी नहीं कि उठा ले झोला और निकल पड़े। लेकिन अभी भी इस दुनिया में ऐसे असंख्य घुमंतू लेखक हैं, जो अपने देश को जानने के लिए उत्सुक हैं, विचारवान हैं और इसी आशा के मध्य नजर रखते हुए निकल पड़ते हैं ऐसे ही। ISBN 978-81-237-7187-8

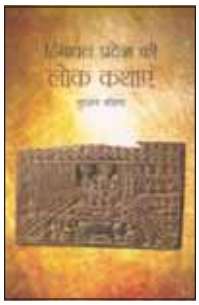

हिमाचल प्रदेश की लोक कथाएँ

सुदर्शन वशिष्ठ पृ. 216 ` 195

लोक कथा का उद्‌भव उतना ही पुराना है जितना मानव सभ्यता का। सृष्टि का पहला कथाकार लोक कथाकार ही रहा होगा। यह धारणा निराधार है कि लोक कथा केवल बच्चों के लिए है। लोक कथा वह है जो बूढ़े ने बालक को सुनाई, युवा को सुनाई, दूसरे बूढ़े को सुनाई। कथा वाचक एक प्रसंग सुनाने के बाद हुँकारे की प्रतीक्षा करता है। सर्दियों के अलाव के पास बच्चे, बूढ़े, युवा; सभी आयुवर्ग के महिला व पुरुष; अपनी-अपनी बुद्धि विवेक के लोग उपस्थित रहते हैं जो अपने-अपने अनुभवों के अनुसार कथा का विश्लेषण करते और प्रश्न पूछते हैं। श्रोता चाहे शिक्षित हो या अशिक्षित, उनका विवेक जागृत होता है और वे कथा को पूरी लगन के साथ आत्मसात करते हैं। बाहर से सादी और साधारण दिखने वाली लोक कथाएँ गहन अध्ययन, गहरी समीक्षा और बारीक मनोविज्ञान लिए हुए होती हैं। समूचे समाज की भावना और मंगल कामना इन कथाओं में छिपी रहती है। तभी अधिकांश कथाएँ सुखांत होती हैं।

हिमाचल प्रदेश में लोक कथाओं का अपार भंडार है। कथा अपने परिवेश के साथ यात्रा करती है और नदी की भाँति पर्वतों को लाँघती हुई मैदानों तक पहुँचती है जिससे एक कथा के कई रूपांतर देखने को मिलते हैं। पुराने समय में सर्दियों की लंबी रातों में अलाव के चारों ओर कथा सुनाने का रिवाज था। कथा कहने वाले को 'काथू' कहा जाता। मशहूर काथुओं को विशेष आमंत्रण देकर बुलाया जाता और वे देर रात तक कथा गायन करते। यदि एक कथा शुरू हो जाए तो यह कई रातों तक चलती रहती। रुचि पैदा करने के लिए काथू बीच-बीच में गप्प भी मारते थे जो श्रोताओं को अभिभूत कर देती। समय के प्रभाववश, बदलते परिवेश और आधुनिक तंत्र के प्रवेश के कारण इस विधा पर बहुत प्रभाव पड़ा है और यह श्रुत साहित्य समाप्त होने के कगार पर है। ऐसे में इस तरह के संकलनों के माध्यम से इस धरोहर का संग्रहण आवश्यक हो जाता है।

ISBN 978-81-237-7177-9

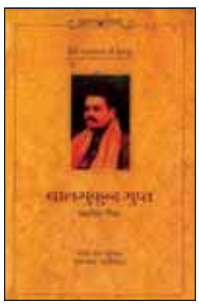

बालमुकुन्द गुप्त : संकलित निबंध

चयन तथा भूमिका : कृष्णदत्त पालीवाल पृ. 264 ` 215

बालमुकुन्द गुप्त का जन्म हरियाणा के एक गाँव 'गुड़ियानी' कस्बे में सन् 1865 ई. को लाला पूरनमल के घर में हुआ। बालमुकुन्द की आरंभिक शिक्षा इसी कस्बे के मदरसे में उर्दू माध्यम से हुई। वह पढ़ने में बड़े लगनशील और प्रतिभाशाली थे।

साहित्य के क्षेत्र में इनकी ख्याति 'शिव शम्भु के चिट्ठे' तथा 'चिट्ठे और खत' से हुई। ये दोनों रचनाएँ 1905 ई. के भारत-मित्र जैसे पत्र में कलकत्ता से प्रकाशित हुई। उनके लेखन की सबसे बड़ी विशेषता है–देशभक्ति, स्वाधीनता और निर्भरता। उन्होंने बड़ी-से-बड़ी चुनौती के सामने झुकना नहीं सीखा था। अपने स्वतंत्र चिंतन के कारण ही वह हिंदी-गद्य के निर्माताओं में सदैव आदर से याद किए जाएँगे और आगे आने वाली पीढ़ियाँ इस अनुपम शैलीकार के व्यंग्य-हास्य पर गर्व करेंगी। पुस्तक के संचयन एवं भूमिका लेखन का कार्य प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल द्वारा किया गया है। ISBN 978-81-237-7138-0

हिंदुस्तानी संगीत

लेखन व हिंदी अनु. : अशोक दा. रानाडे पृ. 168 ` 165

यह पुस्तक भारतीय संगीत की संकल्पना, रूपों और संरचना पर विस्तार से प्रकाश डालती है। *राग, ताल* और *बंदिश; आलाप, ताल* आदि तकनीक, *ध्रुपद, खयाल, दादरा, ठुमरी, तराना, ग़ज़ल, भजन* आदि गायन की शैलियों से लेकर विभिन्न संगीत घरानों, वाद्य यंत्रों और भारतीय संगीत के विभिन्न सिद्धांतों पर बेहद सहज व सरल भाषा में प्रस्तुत यह पुस्तक भारत के संगीत की समृद्ध परंपरा का प्रामाणिक संदर्भ ग्रंथ है। ISBN 978-81-237-7145-8

भारत में विज्ञापन की विकास यात्रा

प्रदीप सौरभ, मानुषी पृ. 160 ` 150

विज्ञापन अब मीडिया जगत की रीढ़ बन गया है। मीडिया-व्यवसाय को सुचारु रूप से चलाने हेतु वैचारिक क्रांति पैदा करने वाले विचारक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तन लाने वाले दार्शनिकों एवं चिंतकों की आवश्यकता न होकर अब बहुराष्ट्रीय कंपनियों की समझ रखने वाले, विज्ञापन जगत में अपने समाचार पत्र अथवा पत्रिका को शीर्ष पर पहुँचाने की क्षमता रखने वाले मार्केट गुरु की आवश्यकता होती है। अतः प्रिंट मीडिया के बुद्धिजीवी संपादक का स्थान अब मार्केट की समझ रखने वाले मार्केटिंग संपादक ने ले लिया है। पत्र-पत्रिकाओं के मालिकों का मुख्य उद्‌देश्य पाठकों को आकर्षित करने की बजाय उपभोक्ताओं को आकर्षित करना हो गया है। यह पुस्तक भारत में विज्ञापन के अतीत की झाँकी प्रस्तुत करने के साथ-साथ, इसकी मौजूदा हालत, इसमें कॅरियर और तकनीक पर विमर्श करती है। ISBN 978-81-237-7176-2

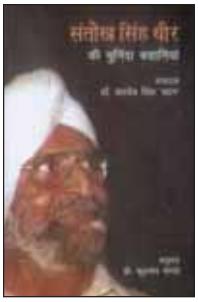

संतोख सिंह धीर की चुनिंदा कहानियाँ

संपादक : डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन'

अनुवाद : प्रो. फूलचंद मानव पृ. 400 ` 350

कथाकार संतोख सिंह धीर का संबंध पंजाबी कहानी की दूसरी पीढ़ी से है। प्रगतिवादी आंदोलन का श्री गणेश यहीं से होता है। संतोख सिंह धीर को अन्य समकालीन कथाकारों की अपेक्षा बेहतर नामपक्षी माना जाता है क्योंकि उनकी अनेक रचनाएँ वामपंथी चिंतन को प्रखरित करती हैं। उनकी कहानियाँ ग्रामांचल के कमजोर वर्ग पर केंद्रित हैं और पंजाब के संकट, आतंकवाद पर भी धीर की उन कथाओं को बेहतर माना जाता है जिनका सृजन उन्होंने देहाती जनजीवन के आधार पर किया है। ऐसी कहानियों को कलात्मक पक्ष से भी श्रेष्ठ घोषित किया जा सकता है। प्रस्तुत कथा संकलन में संतोख सिंह धीर की इक्यावन कहानियों का चयन किया गया है। ISBN 978-81-237-7171-7

पाठक मंच बुलेटिन

बच्चों की द्विभाषी पत्रिका

वार्षिक शुल्क : ` 100.00

संपादक, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया

फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

पुस्तक परिचय

अर्धवृत्त (उपन्यास); *मुद्राराक्षस;* पृ. 542 ` 795
किताबघर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02

पिछले छह-सात दशकों की सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उथल-पुथल के बीच नारकीय जीवन बिताने को मजबूर वंचित समाज की कहानी है यहाँ। यह एक अजब विद्रूप और विडंबना है कि कोलकाता की देह व्यापार करने वाली स्त्रियों की बस्ती के बीच साधारण परिवार के लोगों को अपने दरवाजे पर 'गृहस्थ बाड़ी' की पट्टी चिपकानी पड़ती है।

चाणक्य का नया घोषणा पत्र : भारत के संकट का समाधान
पवन कुमार वर्मा; पृ. 228 ` 395
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02

दो हजार साल पहले चाणक्य ने विपरीत परिस्थितियों में भी राज्य और प्रशासन में एक नए फलसफे के साथ व्यापक परिवर्तन का ताना-बाना बुना था। आज भारत जिस गहन अंधकार से गुजर रहा है ऐसे में चाणक्य की ही तरह की दूरंदेशी की जरूरत है और इसी से देश में परिवर्तन हो सकता है। यही इस पुस्तक का प्रतिपाद्य है।

लालित्य ललित की चुनिंदा कविताएँ
संक. एवं संपा. : डॉ. रमेश तिवारी; पृ. 208 ` 595
यश पब्लिकेशंस, 1/10753, गली नं. 3, सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा, कीर्ति मंदिर के पास, दिल्ली-32

कवि की कविताओं का कैनवस बेहद विशाल है—इस कैनवस में गाँव, शहर, लड़की, संस्कृति, जिंदगी, प्रौद्योगिकी, नेता, मास्टर, माँ, पिता, बहू, ई-किताब तक है, यानी जीवन-जगत के व्यापक रंगों-आख्यानों को पकड़ा और समेटा है कवि ने। संकलन और संपादनकर्ता ने भी अपने नीर-क्षीर विवेक का यहाँ इस्तेमाल बखूबी किया है।

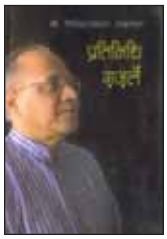

डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल : प्रतिनिधि ग़ज़लें
संपा. : डॉ. शिवाजी एन. देवरे; पृ. 152 ` 200
हिंदी साहित्य निकेतन, 16, साहित्य विहार, बिजनौर, उ.प्र.

समकालीन समाज, देश और समय की धड़कन समाई है डॉ. अग्रवाल की ग़ज़लों में। उनकी ग़ज़लों में समय की विडंबना और विसंगतियाँ साफ-साफ देखी जा सकती हैं। लेकिन उनकी ग़ज़लों की खास बात है उनकी आशावादिता। वे उम्मीदों के ग़ज़लकार हैं, सो, उनकी ग़ज़लों में उनकी इस सोच का प्रतिबिंब भी है।

पानी के बुलबुले (कहानी संग्रह)
प्रवेश धवन; पृ. 128 ` 250
कलावती प्रकाशन, पी-4, पिलंजी, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-23

जिंदगी से उठाई गई ये कहानियाँ जिंदगी के सच का ही बयान हैं। कथाकार ने कहानी का कोई 'प्लॉट' रचा नहीं बल्कि परिवेश से सृजित किया है। इसलिए कहानियों में हमारे आस-पास का यथार्थ पूरी शिद्दत से हमें महसूस होता है।

कुछ भी हो सकता है (कहानी संग्रह)
चंद्रप्रकाश 'जगप्रिय'; पृ. 96 ` 60
निराली दुनिया पब्लिकेशंस, 358-ए, बाजार देहली गेट, दरियागंज, नई दिल्ली-02

आज का समाज मूल्यहीनता का समाज बनता जा रहा है—न नैतिक, न सामाजिक मूल्यों की चिंता। मूल्यों का क्षरण जिस तेजी से हो रहा है उसे बचाने की जद्दोजहद भी इसी शिद्दत से हो रही है। जगप्रिय जी ने भी अपनी कहानियों में इन्हीं छीजते मूल्यों को पुनःस्थापित करने की छटपटाहट दिखाई है।

वृंदा : गाथा सदी की (उपन्यास); *ब्रजेश;* पृ. 560 ` 895
सामयिक प्रकाशन, 3320-21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02

इतिहास, जीवन और दृश्य समय की जादुई सच्चाई क्या खाँटी सच्चाई हो सकती है? उपन्यास में इसी तरह के और अनेक प्रश्न उठाए गए हैं। उपन्यास में सौंदर्य, प्रेम, ग्लैमर और नंगे-भदेस सच, राजनीति, मीडिया से लेकर आम आदमी तक की जिंदगी का एक अजब कोलाज रचा गया है।

जिद्दी रेडियो (कहानी संग्रह)
पंकज मित्र; पृ. 132 ` 250
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02

भारतीय समाज के वर्तमान की पड़ताल करती कहानियाँ। परिवार से लेकर बाजार तक रिश्तों के बदलते समीकरणों तक पर लेखक ने दृष्टि डाली है। लेकिन कहानियों के केंद्र में अंततः आम आदमी है। दस कहानियों का एक पठनीय दस्तावेज।

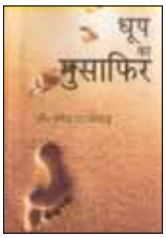

धूप का मुसाफिर (ग़ज़ल संग्रह)
डॉ. गणेश गायकवाड; पृ. 128 ` 175
संवेदना प्रकाशन, गली-2, चंद्रविहार कॉलोनी, क्वार्सी बाइपास, अलीगढ़-202001

ग़ज़ल तबीअत से कही जाए तो दिल में अटकती है और
न कही जाए तो राहों में आवारा-सी भटकती है।

यहाँ डॉ. गणेश ने बड़े ही तबीअत से ग़ज़ल कही है जो पाठक के दिल में सीधे जाकर बैठती है। अपनी ग़ज़लों में उन्होंने शब्दों को सलीके से बरता है इसलिए भी वो सीधे दिल में दस्तक देती है।

समय की पाठशाला में (कविता संग्रह)
मोहन सपरा; पृ. 80 ` 225
आस्था प्रकाशन, लाडोवाली रोड, जालंधर

कवि की पाँच लंबी कविताओं का संग्रह, जो उनके भिन्न-भिन्न संग्रहों से ली गई हैं। कवि के लिए कविता उन्हें तनाव से मुक्त करने का उपकरण है। वे अपना मौन तोड़ने और संवाद करने के लिए कविताएँ रचते हैं। कविता-रचना के बाद कवि ऋण-मुक्ति का अहसास करता है। पाठक इन कविताओं को पढ़कर कवि के इन कथनों की परिपुष्टि ही करेगा, ऐसी उम्मीद है।

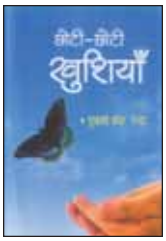

छोटी-छोटी खुशियाँ
सुखवर्ष कंवर 'तन्हा'; पृ. 112 ` 250
बसंती प्रकाशन, पी-137, पिलंजी, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-23

अपने नामारूप इस संग्रह में जीवन-जगत की उन छोटी-छोटी बातों को कथारूप में संजोया गया है जिन्हें अन्यथा हम अकसर 'इग्नोर' कर देते हैं। लेकिन जीवन की इन छोटी-छोटी बातों में ही तमाम खुशियों के बीज छिपे होते हैं। मानवीय गुणों का विकास करने वाली छोटी-छोटी कथाओं का संग्रह।

कोहरे का सूरज (कहानी संग्रह)
जयनाथ मणि त्रिपाठी; पृ. 128 ` 200
अंचल भारती प्रकाशन, राजकीय औद्योगिक आस्थान, गोरखपुर मार्ग, देवरिया-274001

सामाजिक कुरीतियों, पतनशील स्थितियों का भयावह किंतु वास्तविक चित्रण हुआ है यहाँ। अठारह कहानियों का यह संग्रह पाठकीय निकष पर खरा उतरेगा ऐसी उम्मीद है।

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/8/2014

सेवानिवृत्ति

श्रीमती विभा मलिक रा.पु. न्यास में लगभग 40 वर्षों की लंबी सेवा के उपरांत 31 जुलाई, 2014 को सेवानिवृत्त हो गईं। सन् 1974 में न्यास में सेवारंभ के पश्चात उन्हें अनेक प्रोन्नतियाँ मिलीं और वे अधीक्षक (तदर्थ) पद से सेवानिवृत्त हुईं। अपनी सेवा-अवधि के क्रम में उन्होंने न्यास के अनुदान, विक्रय, स्थापना एवं लेखा विभागों में अपनी सेवाएँ दीं।

श्री धरमबीर सिंह रा.पु. न्यास में 34 वर्षों की दीर्घ सेवा के उपरांत 30 जून, 2014 को सेवानिवृत्त हो गए। सन् 1979 में न्यास में सेवारंभ के पश्चात प्रोन्नत होकर वे सहायक के पद तक पहुँचे और इसी पद से सेवानिवृत्त हुए। अपने लंबे कार्य-अवधि में उन्होंने न्यास में विभिन्न विभागों, यथा–प्रशासन, लेखा, विक्रय, पुस्तक केंद्र एवं स्थापना में कार्य किया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के आगामी पुस्तक मेले

श्रीनगर पुस्तक मेला, जम्मू-कश्मीर	– 22 से 31 अगस्त, 2014
त्रिवेंद्रम पुस्तक मेला, केरल	– 4 से 12 अक्तूबर, 2014
भोपाल पुस्तक मेला, मध्य प्रदेश	– अक्तूबर-नवंबर, 2014
पुणे पुस्तक मेला, महाराष्ट्र	– नवंबर, 2014
रायपुर पुस्तक मेला, छत्तीसगढ़	– 1 से 7 नवंबर, 2014
जम्मू पुस्तक मेला, जम्मू-कश्मीर	– नवंबर, 2014
राँची पुस्तक मेला, झारखंड	– नवंबर-दिसंबर, 2014
कटक पुस्तक मेला, ओडिशा	– दिसंबर, 2014
जोधपुर पुस्तक मेला, राजस्थान	– दिसंबर, 2014
देहरादून पुस्तक मेला, उत्तराखंड	– दिसंबर, 2014

पुस्तक मेले से संबंधित जानकारी के लिए संपर्क करें :
उप-निदेशक (प्रदर्शनी)
दूरभाष : 011-26707700/26707778

पंजाब पुस्तक परिक्रमा-1

21 जुलाई से 26 अगस्त, 2014
आयोजक
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

20वाँ दिल्ली पुस्तक मेला 2014

23 - 31 अगस्त, 2014
प्रगति मैदान, नई दिल्ली
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के स्टॉल पर अवश्य पधारें।

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का मुख पत्र है।

इस पत्र के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **उमा बंसल**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
संपादकीय सहयोग : **अल्पना भसीन**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : उमा बंसल।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070